



॥ इन्द्र देव चालीसा ॥

इन्द्र देव की चालीसा, जो कोई नर गावे।  
सुख संपत्ति धन धान्य से, जीवन सफल  
बनावे

---

# FULL DISCLAIMER

---

*This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.*

*This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.*

*Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.*

*Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.*

Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS  
AT YOUR DOOR"

## ॥ इन्द्र देव चालीसा ॥

### ॥ दोहा ॥

जय जय जय इन्द्र भगवान।  
सुरपति देवा कृपा निधान॥  
देवराज तुम जग के स्वामी।  
सकल चराचर अंतर्यामी॥  
स्वर्ग लोक के तुम अधिकारी।  
करहु कृपा भक्तन हितकारी॥

वज्र धरे कर मैं बलशाली।  
दुष्ट दलन करहु रखवाली॥  
ऐरावत पर सदा विराजो।  
देव समाज मध्य सुख साजो॥

मेघनाद तुम वर्षा दाता।  
जीवन जल के तुम विधाता॥  
कृषक जनन के तुम हितकारी।  
हरहु कष्ट विपदा भारी॥

यज्ञ भाग के तुम अधिकारी।  
ऋषि मुनिजन के हितकारी॥  
सुर नर मुनि सब ध्यान लगावें।  
नाम तुम्हारो सुमिरन गावें॥

वृत्रासुर संहारे तुमने।  
धर्म ध्वजा जग बीच थामे॥  
असुर निकंदन वीर महान।  
देव समूह के तुम प्रधान॥

गंधर्व अप्सरा गुण गावें।  
तुम्हरे चरणन शीश नवावें॥  
इन्द्रपुरी अमरावति प्यारी।  
जहँ सुर सुख संपत्ति भारी॥

जो जन श्रद्धा सहित ध्यावे।  
सुख समृद्धि सहज ही पावे॥  
वर्षा समय कृपा बरसाओ।  
अन्न धन से घर भर जाओ॥

रोग दोष भय दूर भगाओ।  
भक्त जनन पर दया दिखाओ॥  
बालक वृद्ध सभी सुख पावें।  
नाम तुम्हारो जो नर गावें॥

दीन दुखी पर करहु सहाई।  
भक्ति भाव सब संकट जाई॥  
वेद पुराण महिमा गावें।

तुम बिन जग जल कौन बरसावे॥  
जय जय जय सुरराज दयाला।  
करहु कृपा भक्त प्रतिपाला॥  
जो यह चालीसा नित गावै।

मनवांछित फल सहजहि पावै॥

### ॥ दोहा ॥

इन्द्र देव की चालीसा, जो कोई नर गावे।  
सुख संपत्ति धन धान्य से, जीवन सफल बनावे॥